Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

सिक्ख गुरुओं से सम्बन्धित संस्कृत महाकाव्य

GURIQBAL SINGH

Research Scholar, Desh Bhagat University, Mandi, Gobindgarh, Jalandhar, Punjab

शोध सार

संस्कृत कवियों के सिक्ख गुरुओं पर मिलने वाले ग्रन्थों को देखने पर पता चलता है कि संस्कृत कवियों के इतिहास की घटनाएं तो वर्णित की ही हैं। साथ ही उनमें समाज की भलाई सम्बन्धित बातें भी बड़े मनोहर ढंग से प्रस्तुत की गई हैं। इसका प्रमुख कारण तो यह है कि इन काव्यों के नायक सिक्ख गुरु बहुत ही उँचे और सब पक्षों से भरपूर चरित्रवाले महापुरुष हैं। वे जितना बल जीवन में विनम्रता अपनाने पर देते थे उतना ही बल इस पर भी देते थें कि भारतीयों को अपना स्वाभिमान किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं है अर्थात् बचाकर रखना हैं। पंजाब का इतिहास प्रमुख तौर पर दस सिक्ख गुरुओं के जीवन चरित, उनके अच्छे तथा नेक कर्मों तथा उपदेशों पर आश्रित है। उनके जीवन दर्शन में अत्याचारियों के प्रति बातचीत का हर संभव यत्न करते रहने का संदेश भी है। सिक्ख गुरूओं से सम्बन्धित अनेक संस्कृत महाकाव्यों की रचना हुई है। नानकचन्द्रोदय श्रीगुरुसिद्धान्तपरिजात श्र्यंक श्रीगुरुगोविन्दसिंहचरित श्रीगुरुनानकदेवचरित श्रीसिखगुरुचरितामृत दशमेषचरितम् दशगुरुचरितम् जैसे ग्रन्थ जिसमें समाज तथा अन्त में मनुष्य का भला हो सके। सिर से पानी गुजरने की स्थिति आ जाने पर देशहित के लिए अत्याचारियों को मुंह तोड़ जवाब देने की भी शिक्षा भारतीयों को मिलती है।

बीज शब्द: सिक्ख, महाकाव्य, गुरु, ग्रन्थ, संस्कृत

भूमिका

सिक्खों के पहले गुरु श्री गुरु नानक देव जी का जीवनकाल 1469 ई॰ से 1539 ई॰ तक और दसवें गुरु श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का समय 1666 ई॰ से 1708 ई॰ तक है। इसी दौरान गुरु अंगद देव, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव, गुरु हरिगोबिन्द, गुरु हरिराय, गुरु हरिकृष्ण और गुरु तेगबहादुर जी ने भी गुरु गद्दी की शोभा को बढ़ाया। इन गुरुओं के जीवन से सम्बन्धित अनेक संस्कृत ग्रन्थों की रचना की गई। भारतवर्ष के अन्य महापुरुषों के जीवन चरित के समान दस सिक्ख गुरुओं के चरित से सम्बन्धित विविध ग्रथों का प्रणयन भी संस्कृत भाषा में उपलब्ध होता है।

नानकचन्द्रोदय

सिक्ख गुरुओं के जीवन चरित को आधार बनाकर महाकवि गंगाराम तथा देवराज शर्मा ने नानकचन्द्रोदय महाकाव्य की रचना की। बहुत कम जानकारी मिलती है कि गंगाराम उदासी सम्प्रदाय के एक प्रसिद्ध कवि थे इनका निवास स्थान काशी था।

गंगाराम उदासिवर्यविदितिः।[1]

जन्म के बारहवें दिन पिता ने पण्डित हरिदयालु से उनका नामकरण संस्कार करवाया।

स द्वादशेऽहन्यकरोत्सुतस्य, नाम प्रसिद्धं जगतीतले यत्।।[2]

गुरु नानक देव जी बचपन से निर्धनों की सहायता करने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। एक बार उनके पिता ने उन्हें कुछ रुपए दे दिए और उनसे कहा कि अच्छा व्यापार करें तो उन्होंने वे रूपए तपस्वियों के भोजन पर खर्च कर दिए। उनकी

यह दानवृति निरन्तर बढ़ती गई। गुरु जी की एकमात्र बहन का नाम 'नानकी' था। वह आयु में गुरु जी से बड़ी थी। उनका विवाह जयराम वर्मा से हुआ। इस विवाह के पश्चात् पिता ने नानक देव को भी बीबी नानकी के पास सुल्तानपुर भेज दिया। नानकी के पति जयराम ने नानक देव को स्थानीय राजा दौलतखान के पास नौकरी पर रखवा दिया।[3] गुरु जी बड़ी दया भावना से निर्धनों को दान देते थे अन्य कर्मचारियों ने कई बार राजा के कान भरे कि नानक दोनों हाथों से कोष को लुटाई जा रहे हैं परन्तु जब मिलान करवाया जाता तो सब ठीक होता। कोष को लाभ ही होता। गुरु जी का विवाह मूलचन्द की पुत्री सुलक्षणी से हुआ इस ग्रन्थ के अनुसार बत्तीस वर्ष की आयु में गुरु जी के बड़े पुत्र श्री चन्द का जन्म हुआ। इसके पाँच वर्ष पश्चात् द्वितीय पुत्र लक्ष्मी चन्द का जन्म हुआ।[4] गुरु नानक अपने सदुपदेश के द्वारा लोगों के सुधार की योजना बनाते। इस योजना को कार्यरुप देने के लिए उन्होंने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ सम्पन्न की। उनका व्यक्तित्व सदाचार, ज्ञान से भरा हुआ है।

इस प्रकार इस ग्रन्थ में नानक के जन्म, वंशजों, नामकरण संस्कार, नानक की दानवृति मोदीखाने में नौकरी करना, उनका विवाह श्री चन्द एवं लक्ष्मीचन्द नानक पुत्रों का जन्म ज्ञानप्राप्ति, देश-विदेश भ्रमण उनके सदुपदेश भाई लहणा को गुरुगद्दी सौंपना तथा गुरु का देहवसान आदि उल्लेखनीय है।

श्रीगुरुसिद्धान्तपरिजात

श्रीगुरुसिद्धान्तपरिजात के रचयिता हरि सिंह साधु ने भी पाप-ताप से पूर्णतया सन्तप्त पृथ्वी का भार-हरण करने के लिए ब्रह्मा की पुकार सुन कर श्रीराम का अवतार ग्रहण तथा दुष्टात्माओं का विनाश करने वाले प्रभुस्वरुप सदगुरु[5]।

श्रुतं ब्रह्मावाक्यं धराभारहानौ, यदा रामचन्द्रस्य कृत्वा स्वरुपम्।

यतोऽकारि देवेन दुष्टस्य नाश, समीशं नमानीति गोबिन्दसिंहम्।।[6]

एवं अभय हाथों में तलवार उठाकर धर्म की सुरक्षा करने वाले, धर्मानुयायी मानवों की मानवता के हित में सिंहरुपधारी श्री गुरु के रुप में अवतरित हुए माना है।

धृतो येन खड्गः कृता धर्मरक्षा, संता रक्षणे निर्मितः सिंहवेषः।

कलौकाल एतादृशः कोऽस्ति वीर स्तमीशं नमामीति गोबिन्दसिंहम्।।[7]

यह महाकाव्य 15 विश्रामों में विभक्त हैं। इसमें कवि ने गुरु नानक देव जी के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन किया है। इस महाकाव्य में गुरु नानक के उपदेशों का भी वर्णन किया गया हैं।

दुःखहानिः सुखावाप्तिरिमे चिन्त्ये त्वदीयके।[8]

अर्थात् दुःख का नाश और सुख का लाभ, ये कामनाए तुम्हारी ही मनोनीत हैं भाव यह है कि मनुष्य दुःख आने पर दुःखी तथा सुख आने पर प्रसन्न हो जाता हैं। जबकि उसको हमेशा सुख दुख से उपर उठना चाहिए। दुःख आने पर घबराना नहीं चाहिए तथा सुख आने पर प्रसन्न नहीं होना चाहिए। मनुष्य को सन्तुलन बनाकर चलना चाहिए ये सुख दुख एक ही सिक्के के पहलू हैं। यह सारी मानव द्वारा निर्मित कल्पनाएँ है और कुछ नहीं। परमात्मा की स्तुति करते हुए गुरु नानक देव जी कहते हैं।

भूर्भुवः स्वरिमे लोकाः सोमसूर्याग्निदेवताः।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

यस्य मात्रासु तिष्ठन्ति तत्परे ज्योतिरोमिति।।[9]

भूलोक, भुवलोक और स्वलोक, चन्द्र, सूर्य और स्वलोक, चन्द्र, सूर्य और अग्निदेवता ये क्रमषः जिसकी मात्राओं में संप्रतिष्ठित है, वह केवल ज्योति स्वरुप "ऊँकार" ही है, अर्थात् परमात्मा सबमें अधिष्ठित है तथा सब कुछ उसी में समाया हुआ है इससे भिन्न कुछ नहीं है। वह परमात्मा ऊँ स्वरुप है वह पहले भी था आज भी है और आगे भी रहेगा उसकी कोई सीमा नहीं है वह असीम है। गुरुसिद्धान्तपरिजात में अंगद देव को गुरु गद्दी का वारिस घोषित किया गया हैं।

यदीपसेवाष्वतोऽतिषीघ्रं ददौ निजाग्डःनरदेव पूज्यः।

गुरुः प्रसन्नो निजहार्दयुक्त नमामि देवं गुरुमग्डदाख्यम्।।[10]

अपनी सत्य सेवा से सत्वर प्रसन्न हुए श्री गुरु (नानक) से अंग स्पर्श का सुख पाकर एवं सुर मुनि नर, सबसे सम्मानित श्री गुरु के चरण कमलों का आश्रय लेकर, उतराधिकारी बने हुए, श्री गुरु अंगद देव को कोटि-कोटि प्रणाम अर्थात् गुरु अंगद देव जी को द्वितीय गुरु घोषित कर दिया गया।

इस ग्रन्थ में द्वितीय गुरु के दो पुत्रों दातू और दासू के अतिरिक्त एक पुत्री 'अमरो' का भी उल्लेख मिलता है। अंगददेव को अपना उतराधिकारी घोषित करने के पष्चात् गुरु नानकदेव ने किन्हीं कारणों से उन्हें खडूर चले जाने का आदेष दिया। जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया था।

दातूदास्विति नामनौ गुरोः पुत्रौ बभूवतुः।

परिणीताऽमरो कन्या सता वासरके पुरे।।[11]

श्रयंक

1801 ई० में अमृतसर निवासी कृष्ण कौर मिश्र द्वारा अठारह सर्गों में रचित श्रयंक महाकाव्य है।[12] जिसके चौदहवें-पन्द्रहवें सर्गों में गुरु गोबिन्द सिंह के गुणों तथा पुत्रों की षहीदी, "खालसा पन्थ की स्थापना" आदि का विस्तृत वर्णन है। इस ग्रन्थ के अनुसार गुरु जी के तीन विवाह हुए थे। उनकी पत्नी 'सुन्दरी' से अजीत सिंह तथा 'जीतो' से जुझार सिंह, जोरावार सिंह एवं फतेह सिंह का जन्म हुआ।[13] श्रयंक महाकाव्य के अनुसार श्री गुरु गोबिन्द सिंह बत्तीस वर्ष ग्यारह मास तक गुरु पद पर आसीन रहें।

"द्वात्रिषद्वर्षमासैकदषमित नृपत्वं चकारैकलीलः"[14]

गुरु जी से सम्बन्धित घटनाओं जैसे कि सर्पच्छाया सच्चा सौदा, पशुचारण, विवाह, सन्तानप्राप्ति, गौचारण, सन्तों के साथ संगोष्ठियां तथा अपने सेवक 'लहणा' की विभिन्न परीक्षाएं लेना, 'लहणा' का नाम अंगद रखना तथा उसे अपना उतराधिकारी नियुक्त करना आदि का उल्लेख मिलता हैं।

श्रीगुरुगोबिन्दसिंह चरित

1966 ई० में डा. सत्यव्रत ने 'श्रीगुरुगोविन्दसिंह चरित' काव्य की रचना की। गुरु गोविन्द सिंह की त्रिशतकीय वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में गुरु गोविन्द सिंह प्रतिष्ठान पटियाला की ओर से 1967 ई० में ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ।[15] यह काव्य 4 सर्गों में विभाजित हैं। इसमें गुरु गोबिन्द सिंह के जीवन को चित्रित किया गया हैं। इस काव्य में गुरु गोबिन्द सिंह जी का जन्म, आनन्दपुर में निवास करना, औरंगजेब के हिन्दुओं पर अत्याचार, हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए तत्पर रहना, गुरु तेग

बहादुर जी का बलिदान, गुरु तेग बहादूर के निर्देषानुसार दषम गुरु के रुप में गुरु गोविन्द सिंह को मान्यता[16] स्वरक्षा के लिए गुरु जी द्वारा सिक्खों को युद्ध कला की षिक्षा आदि घटनाओं का उल्लेख मिलता है। गुरु गोबिन्द सिंह जी ने अनेक भाषाओं में दक्षता प्राप्त कर रम्य काव्य की रचना प्रारम्भ की। उन्होंने चण्डीस्तुति, अकालपूजा आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की गुरु गोबिन्द सिंह को दषम गुरु घोषित करना, खालसा पन्थ की स्थापना गुरु ग्रन्थ साहिब को गुरु रुप में मान्यता तथा गुरु गोबिन्द सिंह का अन्तिम काल आदि उल्लेखनीय हैं।

चण्डीस्तुतिं स्तोत्रवरं च देव्या अकालपूजा बहु चापरं च।

स ग्रान्थाग्रं रचयाम्बभूव रूच्चं कवीनामुजीव्यभूतम्।।[17]

श्रीगुरुनानकदेवचरित

इस महाकाव्य की रचना विष्णुदत्त ने 1982 ई० में की। इनका जन्म मेरठ में 1936 ई० में हुआ। 'श्रीगुरुनानकदेवचरित' में गुरु नानक देव जी के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन मिलता है। यह महाकाव्य 17 सर्गों में विभाजित है। श्री गुरु नानक देव जी की ख्याति संसार भर में प्रसिद्ध है। श्रीगुरुनानकदेवचरित में बताया गया है कि

श्री नानकोयोऽस्ति गतोऽत्रदेषो ख्याति गुरोः सिक्खमहाजनानाम्।

यस्याग्बुज-स्पाधपदव्दयं ते नमन्ति वांछन्ति मनुष्यतां ये।।[18]

गुरुनानकदेवचरित श्री नानक वही है, जिनकी ख्याति सिक्खों के रुप में हैं तथा मानवता के उपासक, जिनके चरण कमलों में प्रणाम किया करते है अर्थात् गुरु नानक देव जी की प्रसिद्धि संसार भर में है उनको सिक्खों के प्रथम गुरु माना जाता है तथा उन्होंने मानव धर्म को श्रेष्ठ बताया है। गुरुनानकदेवचरित में गुरु नानक देव जी के जन्म से पूर्व की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का वर्णन मिलता है।

व्याप्तः समष्टौ निखिलेऽत्र देषे घोरस्तदासीत् कलहो विवादः।

परस्परं क्षृद्रजनाः स्वकीयं निरीक्षय युद्ध्यन्ति सुकुत्सिताधर्म्।।[19]

गुरु नानक के जन्म पूर्व, सम्पूर्ण देश में मानव समाज भंयकर कलह एवं विवाद से युक्त था। क्षूद्रजन जब बुरी संगति में पड़कर प्रयोजनों के लिए अपने स्वार्थवश आपस में लड़ा करते थे। उस समय सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियाँ अच्छी नहीं थी नीच लागों को हीन दृष्टि से देखा जाता था। समाज अनेक वर्गों में बंटा हुआ था तथा लोग बुरे कार्यों में पड़कर अपना प्रयोजन सिद्ध करते थे। अपने स्वार्थी हितों को सिद्ध करने के लिए लड़ाई झगडा करते थे तथा इन सब कुरीतियों को मिटाने के लिए गुरु नानक देव जी ने अवतार धारण किया। श्रीमद्धगवद्गीता में भी लिखा है।

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अम्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्हम्।।[20]

जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती हैं तब भगवान धरती पर अवतार धारण करते है गुरु नानक देव जी ने अवतार धारण किया ताकि वह पापियों को बुराई से अच्छाई की ओर ला सकें। इसके पष्चात् तृप्ता देवी के घर पुत्र नानक के जन्म का वर्णन मिलता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

तेजस्विनं सूनुमसूत तृप्ता दिव्य प्रभा-भासितमात्र भूमौ।

मन्ये तदीष्र्याकलुषा तदैव पूर्वा दिगादित्यमसूतचैध्र्वम्।।[21]

दिव्य स्वरुप पुत्र नानक को तृप्ता ने जन्म दिया। श्री गुरु नानक देव में बचपन से ही दिव्य गुणों का भंडार था। वह ईष्वर की भक्ति करते रहते थे। वह साधारण बालको जैसे नहीं थे उनसे भिन्न ही थे।

कीटादिकानां हनने यदाज्त्र प्रीति भजन्त्येवहि बालकास्ते।

श्री नानकस्तत्र विलोक्य दुःखं कस्यापिवाष्यै व्र्यथितोवभूव।।[22]

जहां अन्य बालक केवल कीड़े और मकोड़ों का वध करने में प्रसन्नता का अनुभव करते है। वहां नानक किसी के भी दुःखों को देखकर व्यथित हो उठते थे। परन्तु नानक साधारण बालक नहीं थे उनमें दया की भावना प्रबल थी उन्होंने न केवल प्राणीमात्र के लिए अपितु जीव-जन्तुओं के प्रति भी दया भावना रखी। श्री गुरु नानक देव हमेषा ईष्वर में लीन रहते थे तथा नानक के पिता ने उन्हें गोचारण, व्यापार के लिए तथा बाद में सुल्तानपुर उनकी बहन नानकी के पास भेजना, उनकी दानवृति आदि घटनाएँ उल्लिखित हैं। इसके पश्चात् गुरु नानक की बाल-क्रीड़ाएँ, यज्ञोपवीत धारण करने से इन्कार, नानक की दान वृति तथा नानक का विवाह, सन्तानप्राप्ति नानक को दिव्यज्ञान की प्राप्ति, मर्दाना का गुरु जी से मिलाप, वाद्य यंत्र रबाब की प्राप्ति तथा शब्द गायन, गुरु नानक द्वारा देष भ्रमण का आरम्भ तथा गुरु जी द्वारा पुनः देश-विदेश की यात्रा पर निकलना, हिन्दुओं तथा मुसलमानों को मानवमात्र की एकता का पाठ पढ़ाना लोगों को षिक्षा प्रदान करना उन्हें सन्मार्ग पर लाना, दया, सन्तोष आदि गुणों पर बल, मानवमात्र का कल्याण करना आदि का वर्णन गुरुनानकदेवचरित में किया गया है।

श्रीशीखगुरुचरितामृत

1933 ई० में इंदौर से प्रकाशित 'श्रीषीखगुरुचरितामृत' ग्रन्थ की रचनाश्रीपादशास्त्री हसूरकर जी ने (1888-1974 ई०) में की।[23] सिक्ख गुरुओं से सम्बन्धित यह ग्रन्थ गद्य में है। इसके 228 पृष्ठ तथा 3 भाग है, प्रारम्भ में पंजाब की भौगोलिक, राजनैतिक तथा धार्मिक स्थिति का वर्णन किया गया है। दस सिक्ख गुरुओं-गुरु नानक देव जी, गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास जी, गुरु अर्जुन देव जी, गुरु गोबिन्द सिंह जी का अद्वितीय चरित्र का वर्णन किया गया है।

तेन तेष्वेव सात्विकबलस्य निरतिषयश्रेष्ठत्वं प्रकटीवभूव।

सज्जनाः! एतदर्थमेव मया तेषामेवचरितामृतं लिखितम्।।[24]

ग्रन्थ लिखने का उद्देश्य बताते हुए हसूरकर जी कहते है कि सात्विक बल की श्रेष्ठता प्रतिपादित करना ही इस ग्रन्थ का मुख्य प्रयोजन हैं।

परमात्मन प्रियमानकनां परस्परं बन्धुभावं जगति प्रसारयितुमेष धर्मः स्थापितः।[25]

सिक्ख धर्म क्यों स्थापित किया गया? उसका उद्देश्य बताते हुए बताया गया है कि मनुष्य में मानवता तथा भाईचारे की भावना को फैलाने के लिए इस धर्म की स्थापना की गई।

श्रीशीखगुरुचरितामृत के अनुसार गुरु नानक देव सिक्ख धर्म के प्रचार के लिए 'ज्वालादेवी' स्थान पर गए थे। वहीं पर गुरु जी के सदुपदेश से प्रभावित होकर अंगद देव उनके शिष्य बने थे।

दशमेषचरितम्

संस्कृत कवि श्रीधर प्रसाद, बलूनी ने सर्वप्रथम 'गुरु गोबिन्द सिंह जी' के जीवन चरित पर 21 सर्गों पर आधारित काव्य की रचना की है। 'दशमेशचरितम्' नामक यह ग्रन्थ 1999 ई॰ में प्रकाषित हुआ।[26] इस महाकाव्य में गुरु गोबिन्द सिंह के सम्पूर्ण जीवन को दर्शाया गया है। इस महाकाव्य के 21 सर्ग है। गुरु गोबिन्द सिंह से पहले नौ सिक्ख गुरुओं और उनके द्वारा स्थापित की गई परम्पराओं का वर्णन मिलता है। हमारे राष्ट्र को गुरु गोबिन्द सिंह के योगदान को बलूनी जी कहते है।

स राष्टं जीवतिं चक्रे दशमेश स्वकर्मणा।

स्फुरति चरितं तस्य स्वयं लोकेशु तत्वतः।।[27]

गुरु गोबिन्द सिंह का पटना साहिब में जन्म और उनकी बाल लीलाओं का वर्णन बहुत सुन्दर श्लोकों के साथ किया है। गुरु तेग बहादुर के पास कश्मीरी पण्डितों का आना और उनके द्वारा हिन्दू धर्म को नष्ट किए जाने का दुःख सुनाना और बालक गोबिन्द राय द्वारा पिता गुरु तेग बहादुर को धर्म की रक्षा के लिए बलिदान के लिए प्रेरित करना, इस प्रकार इस महाकाव्य में गुरु गोबिन्द सिंह के बचपन, गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान, खालसा पंथ की स्थापना और गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा धर्म की रक्षा के लिए लड़े गए प्रमुख ऐतिहासिक युद्धों को प्रस्तुत किया गया है।

दशगुरुचरितम्

इस महाकाव्य की रचना जय नारायण यात्री ने की। इनका जन्म श्रावण मास शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि विक्रमी सं॰ 1987 में, जीन्द जनपद, तहसील नखाना, ग्राम बेलरखा में भृगुवंशी गौड़ ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम पं॰ हरिराम उर्फ मोनीराम तथा माता का नाम भूलां देवी था। जय नारायण यात्री ने इस महाकाव्य की रचना 2009 ई॰ में की[28]। इस महाकाव्य के दस सर्ग है। इस महाकाव्य में दस गुरुओं का वर्णन किया गया है। इसके नायक श्री गुरु नानक देव जी है क्योंकि गुरु गद्दी इन्हीं के नाम से हैं। इस काव्य की नायिका उनकी पत्नी श्रीमति सुलखनी जी है। दशगुरुचरितम् में गुरु नानक देव जी के जन्म के बारे में बताया गया है कि कैसे महिता कालू तथा तृप्ता देवी ने उनका पालन पोषण किया फिर उन्हें पढ़ने के लिए भेजा परन्तु नानक ने कहा...

अतो विमुच्या खिलवर्णमाला।

ओंकार मेकं बुध! पाठस्य।।[29]

हे विद्वान! सारी वर्णमाला को छोड़कर मुझे तो एक ओंकार ही पढ़ाओ।

विनश्वंर वेद्मि जगत समग्रं

ध्यायाम्यहोरात्र मतो मुरारिम्।[30]

गुरु नानक देव जी सारे संसार को नाशवान समझते है रात दिन ईश्वर का स्मरण करते हैं। गुरु नानक देव जी की बचपन घटनाओं से ज्ञात होता है कि गुरु नानक देव जी महान पुरुष थे तथा लोगों के कल्याण के लिए बहुत प्रयत्न किए।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

ममैव रुपं दयितामरं त्यं सदैव जानीहि

गुरु ममान्ते।।[31]

गुरु नानक देव जी लोगों को कहते है कि मेरी मृत्यु के बाद अमरदास अर्थात् अंगद को तुम मेरा ही रुप समझो अर्थात् गुरु नानक जी ने पहले ही कह दिया था कि मेरी मृत्यु के बाद गुरु अंगद देव जी गुरु गद्दी संभालेंगे। इस प्रकार दषगुरुचरितम् महाकाव्य में दस गुरुओं का वर्णन किया गया है। सबसे पहले गुरु नानक देव जी, गुरु अमरदास जी, गुरु रामदास, गुरु अर्जुन देव जी, गुरु हरगोबिन्द जी, गुरु हरराय, गुरु हरकृष्ण जी, गुरु तेग बहादुर जी तथा अन्तिम में गुरु गोबिन्द जी का वर्णन किया गया है। इस प्रकार इस गुरुओं के बारे में यह महाकाव्य अति महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

हम यह कह है कि भारतवर्ष के अन्य महापुरुषों के जीवन चरित के समान दस सिक्ख गुरुओं के चरित से सम्बन्धित विविध ग्रथों का प्रणयन भी संस्कृत भाषा में उपलब्ध है संस्कृत साहित्य के इस वर्ग में सिक्ख गुरुओं पर आधारित संस्कृत ग्रन्थों का एक विशेष स्थान है। सिक्ख गुरुओं पर आधारित समय समय पर अनेक संस्कृत ग्रन्थ लिखे गए हैं। इन ग्रन्थों का अपना विशेष महत्वच है। सिक्ख गुरुओं से सम्बन्धित यह ग्रन्थ उनके जीवन पद्धति का आधार है जिनसे समाज की उन्नति हो सकती है।

संदर्भ

1. न. च. 1/1
2. सं. सा. सि. गु. व. पृ. सं. 57
3. वही पृ॰ सं. 57.
4. सं. सा. सि. गु. व. पृ. सं. 57
5. गु. गो. सि द. ग्र. वि. आ. पृ. सं. 25
6. वही, पृ. सं. 25
7. गु. गो. सि द. ग्र. वि. आ. पृ. सं. 25
8. गु. सि. परि., पृ. स. 178
9. वही, पृ. सं. 190
10. गु. सि. परि., पृ. स. 209
11. वही पृ. सं. 94
12. गु. गो. सिं. द. ग्र. वि .आ. पृ. सं. 24
13. वही, पृ. सं. 28
14. वही, पृ. सं. 24
15. गु. गो. सिं. द. ग्र. वि .आ. पृ. सं. 26.
16. वही, पृ. सं 26.
17. वही, पृ. सं 26
18. गुरू नानक.....1/41
19. वही, 2/2
20. भग. गी. 4/7

21. गुरू नानक.....3/34
22. वही, 4/27
23. सं. सा. सि. गु. व. पृ. सं. 35
24. पं. स.ं सा. यो .पृ. सं. 263
25. सं. सा. सि. गु. व. पृ. सं. 35
26. सं. सा. सि. गु. व. पृ. सं 144
27. वही, पृ. सं 144
28. द. गु. च. पृ. सं. 1
29. द. गु. च. पृ. सं. 1/27
30. वही, 1/9
31. द. गु. च. 3/61

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

शर्मा देवराज (1977) नानकचन्द्रोदय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
गुरु गोबिन्द सिंह जी तथा दशम ग्रन्थः सं.1 सि.(2000) विविध आयाम विनोद तनेजा, विभोर प्रकाशान, अमृतसर
मिश्र डा. जयराम, नानक वाणी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद
विपुल (2009) श्रीमद्भगवद्गीता, प्रथम संस्करण काव्य प्रकाशक हंसा प्रकाशन 51 जयपूर
यात्री जयनारायण, (2009) दशगुरुचरितम् (महाकाव्यम्) प्रथम संस्करण विश्वनाथ प्रिन्टर्स करनाल, दिसम्बर
शर्मा डा. लेखराम, चाहल डा. दलबीर सिंह (2009) पंजाब का संस्कृत साहित्य को योगदान इन्डिपैंडेट पब्लिकेशन कम्पनी दिल्ली, प्रथम संस्करण